59.हिंदी भाषा और रोजगार

–डॉ.मारोती यमुलवाड
हिंदी विभाग, बलभीम महाविद्यालय, बीड

भूमंडलीकरण के इस युग में भाषा के उपयोजित रुप, उसकी उपयोगिता और रोजगारपरकता को अधोरिखित करना अत्यंत आवश्यक है। बाजारवाद, निजीकरण, उदारीकरण जैसी समस्या का सामना करना तभी संभव है जब भाषारुपी कौशल को जीवनोपयोगी, रोजगाराभिमुख एवं व्यावसायिक रूप में आत्मसात किया जाए। इक्कीसवीं शताब्दी में जनसंचार के माध्यम तथा औद्योगिक विकास के कारण हिंदी भाषा को अत्यधिक महत्व प्राप्त हुआ है। वर्तमान समय में हिंदी भाषा मात्र संपर्क भाषा नहीं रही, बल्कि वह रोजगारपरक भाषा के रूप में उभरकर आयी है। आज भारत के साथ–साथ विश्व के कई अलग–अलग देशों में हिंदी भाषा के माध्यम से सम्मानजनक रूप में रोजगार प्राप्त करनेवाले लोगों की संख्या लाखों में हैं। हिंदी भाषा संवाद तथा लेखन कौशल के आधार पर जहाँ रोजगार की संभावनाएं हैं वे पदनाम और क्षेत्र इस प्रकार है **मल्टीमीडिया लेखक** : मीडिया का मानव जीवन से अत्यधिक महत्व है। इक्कीसवीं सदी सूचना प्रौद्योगिकी में क्रांति का उपस्थापक है। आधुनिक युग में प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की समृद्धि, प्रगति और उपलब्धि जनसंचार क्रांति का द्योतक है। मीडिया के क्षेत्र में सेवारत मध्यम टेलीविजन, सिनेमा, रेडियो तथा समाचार पत्र के क्षेत्र में अनुवादक, उद्घोषक, प्रबंधक, निदेशक, कंपेयरिंग, प्रचारक, कमेंटेटर, संवाददाता, साक्षात्कारकर्ता, पल्लवनकर्ता, संक्षेपणकर्ता, प्रोग्राम ऑफिसर, पटकथा लेखक आदि के रूप में रोजगार की संभावनाएं हैं। इस क्षेत्र में भाषा के बलबूते रोजगार प्राप्ति के लिए विशेष प्रशिक्षण के साथ–साथ लेखन कौशल्य की आवश्यकता होती है। मीडिया लेखन के बढ़ते महत्व को देखते हुए देश के बहुत से विश्वविद्यालयों में मीडिया लेखन एवं प्रबंधन से संबंधित विशेष प्रशिक्षण कोर्स शुरू किए गए हैं।

संवाददाता या पत्रकार : वर्तमान समय में देश में शिक्षा का प्रचार–प्रसार तथा संचार माध्यमों के विस्तार के कारण पत्रकारिता का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। साथ ही पत्रकारिता एक महत्वपूर्ण कार्य के साथ–साथ रोजगार का एक नया अवसर तथा क्षेत्र बनकर उभरा है। आज–कल समाचार पत्र, पत्रिकाएं, रेडियो, टेलीविजन, समाचार चैनल्स, फिल्म आदि के माध्यमों के विस्तार के कारण संवाददाता तथा पत्रकारों की मांग बढ़ गई है। पत्रकारिता की बहुआयामिता हम उसके प्रकारों के रूप में देख सकते हैं–खोज पत्रकारिता, एडवोकेसी, वैकल्पिक, वॉच डॉग, पीत पत्रकारिता, पेज थ्री पत्रकारिता तथा विशेषीकृत पत्रकारिता में–ग्रामीण एवं कृषि पत्रकारिता, शैक्षिक, संसदीय वाणिज्यिक, आर्थिक, न्यायालय, खेल, बाल, रेडियो, फिल्म, दूरदर्शन, फोटो, विज्ञान और विकास अपराध, फैशन इंटरनेट इन क्षेत्रों में कुशल तथा प्रशिक्षक संवाददाता, संपादक, उपसंपादक, प्रुफरीडर, साक्षात्कारकर्ता, रिपोर्टर, कार्टून, निर्माता तथा पत्रकारों की आवश्यकता है। अर्थात हिंदी संवाद और लेखन कौशल के आधार पर इस क्षेत्र में भी रोजगार उपलब्ध है। अतः पत्रकारिता अपने सीमित दायरे से निकलकर विभिन्न क्षेत्रों को अपने में समायोजित कर चुकी है। "अगर हिंदी के अध्येता हिंदी के बलबूते पर धन पाना चाहते हैं तो पत्रकारिता जैसे क्षेत्र में संपादक जैसे पद पर सेवा का अवसर पाकर यह संभव हो सकता है। भाषा के सही ज्ञान के अभाव में आज कई पत्र–पत्रिकाओं में अयोग्य लोग भी संपादक बनकर कार्य कर रहे हैं।"1

अनुवादक : अनुवाद एक कला है। अनुवाद का कार्यक्षेत्र बहुत ही विशाल है। विश्व को एक सूत्र में बांधने के लिए, मानव–मानव को एक दूसरे के निकट लाने में, मानव जीवन को आनंदमय और संपन्न बनाने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्राचीन और आधुनिक देशी–विदेशी साहित्य का अनुवाद समस्त मानव जीवन के कल्याण का आधार बन सकता है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की सफलता के लिए अनुदित साहित्य एक नया मोड़ दे सकते हैं। हिंदी भाषा के विस्तार को स्पष्ट करते हुए डॉ. संजय चौहान कहते हैं कि– "विभिन्न आयोगों अकादमियों एवं निजी संस्थाओं द्वारा भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, इंजीनियरिंग, चिकित्सा विज्ञान, गणित, वनस्पति विज्ञान, योगासन, मनोविज्ञान, ज्योतिष विज्ञान आदि की अब तक 15000 पुस्तकों का प्रकाशन भारतीय भाषा में हो चुका है। जिनमें केवल हिंदी में प्रकाशित पुस्तकों की संख्या 3000 से अधिक है।"2 युवकों को अनेक रोजगार के अवसर अनुवाद के द्वारा प्राप्त होते हैं। ज्ञान, शिक्षा, विज्ञान एवं तकनीकी, वाणिज्य व्यापार, प्रशासन, विधि, संचार माध्यम, विज्ञापन, फिल्मों की डबिंग और फिल्म, साहित्य आदि से संबंधित लिखित सामग्री का अनुवाद बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। ऐसे में प्रशासनिक, सरकारी तथा निजी क्षेत्र में अनुवाद कार्य के लिए रोजगार की अनगिनत संभावनाएँ उपलब्ध हो रही है। सफल अनुवादक के लिए अनुवादक का विशेष प्रशिक्षण लेने की आवश्यकता होती है। देश के अलग–अलग विश्वविद्यालय में अनुवाद प्रशिक्षण के कोर्सेस चलाए जाते हैं।

अध्यापक / प्राध्यापक :स्नातक तथा स्नातकोत्तर शिक्षा के दौरान ऐच्छिक हिंदी के रूप में हिंदी भाषा एवं साहित्य का अध्ययन करने पर स्कूल, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय तथा अन्य शैक्षिक संस्थानों में हिंदी अध्यापक, प्राध्यापक पद पर सेवा करने का अवसर प्राप्त होता है। समग्र देश में हिंदी के अध्यापक, प्राध्यापक लाखों की संख्या में सेवारत है। हिंदी के बढ़ते महत्व को लेकर भगवान वैद्य 'प्रखर' कहते हैं कि "आज विश्व में लगभग 150 विश्वविद्यालयों तथा सैंकड़ों छोटे–बड़े केंद्रों में विश्वविद्यालयों स्तर पर हिंदी के अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था है।"3

राजभाषा अधिकारी :हिंदी को भारतीय संविधान में राजभाषा घोषित किए जाने के साथ ही भारत सरकार के अधिनस्थ मंत्रालयों, विभागों, सरकारी निगमों–निकायों, बैंकों, दूरसंचार, डाक विभाग, बीमा क्षेत्र आदि में राजभाषा कार्यान्वयन की शुरुआत हुई और फलतः लगभग हर विभाग में हिंदी अनुवाद की स्थापना हुई । राजभाषा नियम, अधिनियम आदि के कार्यान्वयन को समन्वित करने का उत्तरदायित्व हिंदी अधिकारियों को सौंपा गया है। हिंदी अधिकारियों की नियुक्तियां संसदीय राजभाषा समिति की सिफारिशों पर होती है। आज भी लगभग हर विभाग में एक हिंदी अधिकारी सेवारत है। जिसके लिए अनिवार्य शैक्षिक योग्यता है स्नातकोत्तर हिंदी उपाधि और उच्चतर शिक्षा। हिंदी के साथ अन्य भाषाओं में अंग्रेजी भाषा का गहरा ज्ञान आवश्यक है। अंत हिंदी के बलबूते सम्मानजनक वेतनमान के साथ इस क्षेत्र में रोजगार की व्यापक संभावनाएं हैं। "विभिन्न मंत्रालयों/उपक्रमों में राजभाषा प्रयोग में हिंदी अनुवादक, हिंदी आशुलिपिक, हिंदी टंकण, दुभाषिक फिर कंप्यूटर–संचालक नियुक्त हुए साथ ही हिंदी प्रशिक्षक शिक्षक भी राजभाषा विभाग से संलग्न हुए।"4

पर्यटन क्षेत्र:देश–विदेश में निरंतर पर्यटन क्षेत्रों का विकास और विस्तार हो रहा है। प्रतिवर्ष विशेष मौकों पर पर्यटक बड़ी संख्या में देश–विदेश के पर्यटन स्थल देखने के लिए यात्रा पर निकल रहे हैं। ऐसे में उन सभी पर्यटकों को पर्यटन स्थलों की परिपूर्ण जानकारी देने तथा मार्गदर्शन करने के लिए पर्यटक मार्गदर्शक (tourist guide) की आवश्यकता होती है। इस क्षेत्र में रोजगार प्राप्त करने के लिए हिंदी भाषा के साथ–साथ अन्य विदेशी भाषा का परिपूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। अर्थात पर्यटन मार्गदर्शक को दुभाषिया होना बहुत जरूरी है। डॉ. अंबादास देशमुख इस संदर्भ में कहते हैं, "अनुवाद करना एक पेशा भी है। अतः अनुवादक पेशे का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र पर्यटन का क्षेत्र है । यहां काम करनेवाले लोगों को स्थानीय भूगोल, संस्कृति, सभ्यता एवं इतिहास की अच्छी जानकारी रखनी पड़ती है"5 आज महाराष्ट्र में पर्यटन क्षेत्र में कार्य करनेवाले अनेक एजन्सिया है। उन्हें गाइड के रूप में ऐसे जानकारी रखनेवाले युवाओं की आवश्यकता है। जो विदेशी लोगों को उनकी भाषा में यहां की जानकारी दें।

विज्ञापन क्षेत्र:विज्ञापन आधुनिक युग का विशेषकर औद्योगिक संस्कृति का आवश्यक तत्व बन गया है। साथ ही प्रशासन, शिक्षा, कृषि, पत्रकारिता, समाजकल्याण, वाणिज्य आदि विभिन्न क्षेत्रों में विज्ञापन ने अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। वस्तुओं के उत्पादन तथा वितरण में विज्ञापन की भूमिका अहम होती है। हमारे देश में टेलीविजन, रेडियो, समाचार पत्र और अन्य सभी आधुनिक जनसंचार माध्यमों के लिए बनाए जानेवाले विज्ञापन बड़ी मात्रा में हिंदी में ही होते हैं। अतः विज्ञापन के क्षेत्र में विज्ञापन निर्माता, विज्ञापन सलाहकार, विज्ञापन विशेषज्ञ के रूप में रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। वर्तमानकाल में विज्ञापन क्षेत्र में रोजगार के अनेक अवसर दिखाई देते हैं। विज्ञापन समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आज हर क्षेत्र में विज्ञापन का साम्राज्य है। इस संदर्भ में प्रो. रमेश जैन का मत महत्वपूर्ण है– "कोई भी प्रसार माध्यम हो, विज्ञापन सब जगह देखे जा सकते हैं। समाचारपत्र, पत्रिकाएं, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमाघर हो या नगर की सड़कें, सब तरफ इनका साम्राज्य है।"6

विज्ञान और प्रौद्योगिकी:भूमंडलीकरण के कारण विज्ञान और प्रौद्योगिकी का तीव्र गति से विकास हुआ है । आज विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने मानव वन को अत्यधिक प्रभावित किया है । ऐसे में वैज्ञानिक क्षेत्र के कार्य तथा प्रौद्योगिकीय विकास में भाषा तथा अनुवाद की विशेष भूमिका । अतः इस क्षेत्र में विक्रय एवं विपणन अधिकारी , सलाहकार , अनुवादक आदि के रूप में रोजगार उपलब्ध है ।

मौलिक लेखक : हिंदी भाषा में मौलिक लेखन करना अर्थोपार्जन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कार्य है । वर्तमान में कोई भी युवक या व्यक्ति अपनी बुद्धि, प्रतिभा और निरंतर अभ्यास के द्वारा एक उच्च स्तरीय लेखक, कवि, गीतकार, पटकथा लेखक, संवाद लेखक, नाटयरुपांतरकार बन सकता है । स्तरीय साहित्य या मौलिक लेखन लेखक को अच्छी आमदनी (रॉयल्टी) दे सकता है । आज–कल फिल्म, धारावाहिक, विज्ञापन आदि का प्रचलन अधिक बढ़ गया है । इसलिए इन माध्यमों के लिए सृजनात्मक लेखन करनेवाले लेखकों की अत्यधिक माँग है । ऐसे हालात में युवक स्वतंत्र मौलिक लेखन में अपना कैरिअर सँवार सकते है ।

लोकसेवा आयोग की परीक्षाओं में ऐच्छिक विषय के रूप में हिंदी का चयन :भारतीय प्रशासनिक सेवाओं के विभिन्न पदों के लिए

महाराष्ट्र लोकसेवा आयोग तथा संघ लोकसेवा आयोग स्पर्धा परीक्षाओं का आयोजन करता है । इन आयोगों द्वारा आयोजित मुख्य परीक्षा के लिए ऐच्छिक विषय के रूप में हिंदी का चयन और अध्ययन युवक कर सकते हैं ।

केंद्र सरकार के कार्यालयों तथा अन्य विभाग की परीक्षाओं में माध्यम के रूप में हिंदी का चयनः भारतीय केंद्रीय सरकार के विभिन्न कार्यालयों के विभिन्न पदों की परीक्षाओं के माध्यम के रूप में भी हम हिंदी भाषा का चयन कर सकते हैं। जैसे डाक विभाग, बैंक, बिमा, विधि, स्टॉफ सलेक्शन, रेल विभाग, नेट परीक्षा (National Eligibility Test), केंद्रीय विद्यालय संगठन में अध्यापक की परीक्षा (PGT, TGT), इग्नू विश्वविद्यालयों के पाठयक्रम का माध्यम चयन आदि।

इसके अलावा व्यापार, हॉटेलिंग, कॉलसेंटर, विज्ञापन, रेडियों आदि क्षेत्रों में भी रोजगार की संभावनाएं है । अतः यह कहा जा सकता है कि वर्तमान में हिंदी केवल राष्ट्रभाषा, राजभाषा या संपर्क भाषा ही नहीं बल्कि वह रोजगार की भाषा, अर्थोपार्जन को भाषा तथा रोजी–रोटी की भाषा के रूप में अपनी उपादेयता सिद्ध कर रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः 1.डॉ. अर्जुन चौहान, मीडिया कलीन हिंदी : स्वरूप एवं संभावनाएं पृष्ठ – 135, राधाकृष्णन प्रकाशन, दिल्ली 2005 । 2.डॉ. संजय चौहान, राष्ट्रभाषा, संयुक्तांक – 7–8, अगस्त 2010 सं. अनंतराम त्रिपाठी पृष्ठ – 24 3.भगवान वैद्य 'प्रखर' – भाषा, सितंबर–अक्टूबर 2012 वर्ष 52, अंक–247 संपादक भगवती प्रसाद निदारिया पृष्ठ– 36 4.कार्यालयीन हिंदी–डॉ.बालेन्दु शेखर तिवारी, अभिषेक अवतंस, क्लासिकल पब्लिशिंग, नई दिल्ली, प्र. सं. 2006, पृष्ठ संख्या – 30 5.प्रयोजनमूलक हिंदीः अधुनातन आयाम डॉ अंबादास देशमुख, पृ. 482 6.प्रो. रमेश जैन जनसंचार में कैरियर पृ. – 94

60.भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी की वैश्विक स्थिति

–डॉ.यशोदा मेहरा
सहायक आचार्य, हिन्दी,
राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा

हिन्दी भारत की प्रधान भाषा है। भारत में सुदूर पूर्व से लेकर पश्चिम तक, उत्तर से लेकर दक्षिण तक सम्पूर्ण भारतवर्ष में बसे हुए भारतीयों की सम्पर्क भाषा हिन्दी है। हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो विविध भाषा–भाषी लोगों को एक सूत्र में पिरोये हुए है। भाषा भावों की संवाहक होती है। भाषा चाहे कोई भी क्यों न हो वह चिर–परिवर्तनशील होती है। हिन्दी भाषा का उद्‌भव भी संस्कृत से हुआ है और यह पालि, पाकृत व अपभ्रंश का चोला बदलती हुई वर्तमान स्वरूप को प्राप्त हुई है। आज न केवल भारत में अपितु समूचे विश्व में हिन्दी ने अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया है। भूमण्डलीकरण के कारण हिन्दी की आज एक नयी पहचान बनी है।

भूमण्डलीकरण या वैश्वीकरण को भारतीय संस्कृति की मूल अवधारणा ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' का परिवर्तित रूप माना जा सकता है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' सर्वजन हिताय व सर्वजन सुखाय की मूल भावना पर आधारित था परन्तु भूमण्डलीकरण की अवधारणा मूलतः व्यावसायिक लाभ की दृष्टि का प्रतिफल प्रतीत होती है। यद्यपि भूमण्डलीकरण की यह प्रक्रिया अचानक 20वीं सदी में उत्पन्न नहीं हुई। दो हजार वर्ष पूर्व भारत ने उस समय विश्व व्यापार के क्षेत्र में अपना सिक्का जमाया था जब वह अपने ज़ायकेदार मसालों, खूशबूदार इत्रों एवं रंग–बिरंगे कपड़ों के लिए जाना जाता था। तभी से वसुधैव कुटुम्बकम् की उक्ति प्रचलित रही है।

प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक नोम चॉमस्की का मानना है कि वैश्वीकरण का अर्थ अन्तर्राष्ट्रीय एकीकरण है। इस एकीकरण में भाषा की अहम् भूमिका होगी और जो भाषा व्यापक रूप से प्रयोग में रहेगी उसी का स्थान विश्व में सुनिश्चित होगा। महात्मा गाँधी ने इस सत्य को पहचानते हुए ही कहा था कि–''काँग्रेस अधिवेशन की कार्यवाही केवल हिन्दी में होगी क्योंकि सम्पूर्ण राष्ट्र तक यदि हमें काँग्रेस का संदेश पहुँचाना है तो वह केवल हिन्दी के माध्यम से ही सम्भव हो सकता है।''[1] तत्कालीन समय में गाँधी जी द्वारा कही गई यह बात आज भी प्रासंगिक है। आज भी किसी प्रकार का कोई संदेश यदि जनता तक पहुँचाना हो तो अन्य भाषाओं की तुलना में हिन्दी ही सरल व आसान भाषा के रूप में प्रयोग में लाई जा सकती है।

ISSN-2454-6283 PEER Reviewed Journal